IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

कबीरा खड़ा बाजार में नाटक में धार्मिक दृष्टिकोण

Dr. Chandni Keshavpuri Goswami
Assistant Professor, Department of Hindi
D. K. V. College, Jamnagar, Gujarat, India

मध्यकालीन कवि कबीर अपने समय से हटकर दार्शनिक और क्रांतिकारी विचारधारा के लिए प्रसिद्ध हैं | कबीर का लेखन आधुनिक समय में भी प्रस्तुत है | भीष्म साहनी द्वारा रचित 'कबीरा खड़ा बाज़ार' में नाटक कवि कबीर के व्यक्तित्व और विचारधारा को लेकर लिखा गया है | जिसमें कबीर का पात्र अलमस्त, फक्कड़, मस्तमौला, बड़बोला है, जो किसी परिणाम की चिंता किये बगैर खरी - खरी कहता है | विद्रोही कबीर अपने समय के दो प्रमुख धर्म हिन्दु - मुस्लिम से हटकर मानवधर्म के पक्षधर हैं | वह परम्परावादी रूढ़ी वादी विचारधारा, अंधश्रद्धा- कुप्रथा युक्त रूग्ण विचारधारा और असमानता के बदले समन्वयवादी विचारधारा को लेकर उभरे हैं | सत्ता का तानाशाही रूप और दलित और शोषित वर्ग की लाचारी, धर्म के नाम पर उन पर हो रहे अत्याचार और शोषण को इस उपन्यास में भीष्मजीने मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है | धार्मिक असमानता, आडम्बर और अंधश्रद्धा के कारण दबे - कुचले वर्ग का शोषण यहाँ दर्शाया गया है | दुःख की बात है की मध्यकालीन कवि कबीर के समय का सामाजिक परिवेश और वर्तमान परिवेश में कोई विशेष अंतर नहीं आया है, आज भी धार्मिक संकीर्ण विचारधारा ज्यों की त्यों है | लोग पूजा - पाठ, कर्मकांड, आज़ान को ही ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता मान बैठते है और साधु - मौलविओं द्वारा सिखलाई धर्म की परिभाषा से हटकर कुछ नहीं सोच सकते, पर इस नाटक में कबीर धर्म के ठेकेदारों से उलझते नज़र आते है | कबीर जन्म से हिन्दू हैं और इनका पालन - पोषण मुस्लिम जुलाहा परिवार में हुआ है | कबीर अपनी मां से कहता है " कोई हिन्दू पूछेगा तो कहूंगा ब्राह्मणी का बेटा हूँ, कोई तुर्क पूछेगा तो कहूंगा, नीमा मुस्लमानीन का बेटा हूँ यही न ? इसमें हिन्दू भी कोड़े नहीं मारेंगे तुर्क भी कोड़े नहीं मारेंगे | "[१]

कबीर के विद्रोही व्यक्तित्व के कारण मुल्ला-मौलवी और साधु चिढ़ जाते हैं | जब सभी उनके उपदेश को पत्थर की लकीर मानकर सुनते हैं , तब कबीर भीतर रही जिज्ञासा के कारण उनसे प्रश्न पूछते हैं , वह अँधेरे में रौशनी खोजना चाहते हैं -

"परबति परबति मैं फिरिया ,नैन गवाएं रोये
सो बूटी पाऊँ नहीं ,जाते जीवन होये
सुखिया सब संसार है, खावे अरु सोवे
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवे | "[२]

इसी तरह गौतम बुद्ध भी सांसारिक जीवन की निरर्थकता के विषय में 'यशोधरा' खंड काव्य में सोचते है -

" कपिल भूमि - भागी, क्या तेरा,
यही परम पुरूषार्थ हाय !
खाय-पिये, बस जिये - मरे तू,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

यों ही फिर आए आए - जाए | "३

कबीर और बुद्ध दोनों अपने समय के लोगों से भिन्न विचारधारा रखते थे ,इसलिए इनका मन अशांत था, जबकि सारा समाज परिस्थिति अनुसार खुद को ढाल चूका था और शांत था | कबीर की जिज्ञासा और सही - गलत का विशेष दृष्टिकोण साधु और मौलवियों के लिए सिर दर्द बन जाता है | आम जनता में उनकी विचारधारा के प्रचार - प्रसार से कई लोगों के शासन डोलने लगते हैं |

इस नाटक में धर्म सम्प्रदाय के कारण उत्पन्न असमानता पर भी व्यंग्य किया गया है | कोतवाल के पूछने पर कि आपके यहाँ मठ - मंदिर में जात - पात बहुत है | तब कायस्थ भाल के टीके के आधार पर लोगों के सम्प्रदाय की पहचान करवाता है | ईश्वर ने मनुष्य को एक - दूसरे से भिन्न नहीं बनाया परन्तु धर्म व्यवस्था ने उसे अलग बनाया | धार्मिक संकीर्णता खोखली है और सत्ता के डर के आगे कमज़ोर पड़ जाती है | इसी लिए कायस्थ कहता है - " जिसके हाथ में भगवान ने शक्ति दी है, उसकी जात नहीं देखी जाती है | आप तो नगर के कोतवाल हैं | "४

समाज में रूढ़िवादी संकीर्ण विचारधारा के मूल नहीं मिल रहे, पर उन पर वटवृक्ष बन गया है | कोतवाल के पूछने पर कि मूर्तियां तो मुस्लिम कारीगर बनाते हैं, तब कायस्थ कहता है - "जी पर स्थापित करने से पहले उन पर गंगा जल छिड़ककर उन्हें पवित्र कर लिया जाता है | प्राण - प्रतिष्ठा तो बाद में होती है | प्राण प्रतिष्ठा के बाद मूर्ति देवता बन जाती है , उसके पहले तो पत्थर है | "५

बिना तार्किक बुद्धि के प्रयोग के भेड़ चाल चलने के कारण मान्यताएं रूढ़ होती जा रही हैं | एक ओर भारत जहाँ 'वसुधैव कुटुंबकम' की बात कर रहा है, वहां यह धार्मिक विग्रह मानवता का अपमान है | मठ की सवारी के प्रसंग में साधु चाबुक उछाल रहा है, तब कायस्थ कहता है - " यह निच जात के लोगों को रास्ते पर से हटाने के लिए, मालिक | झाँकी पर किसी कमीन का साया नहीं पड़ना चाहिए | "६

साधु शब्द का अर्थ है - उत्तम मनुष्य | उत्तम मनुष्य किसी को उच्च तो किसी को नीच कैसे मान सकता है ? कबीर ने अपनी एक साखी में कड़वे वचन बोलने वाले साधु पर भी व्यंग्य किया है - " साधु भया तो क्या भया बोले नाहीं विचार, हते पराई आत्मा जीभ बाँधी तरवार | "७ यहाँ इस नाटक में तो साधु चाबुक लिए हिंसा का समर्थन कर रहे है |

कवि दिनकर की 'रश्मिरथी' कृति भी इसी अलगतावाद के खिलाफ है | उन्होंने खंड काव्य 'रश्मिरथी' के प्रथम सर्ग में ही लिखा है -

"ऊंच - नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है | "८

कबीरा खड़ा बाज़ार में नाटक में महंत की सवारी के दृश्य में महंत के वैभवशाली जीवन और उसके द्वारा प्रजा के शोषण को दिखाया है | महंत के कुल्ले से गिरे पानी को माथे पर लगाने के लिए स्त्रियों में भगदड़ मच जाती है | उनके पैरों का चरणामृत स्त्री - पुरुष पिते हैं | उन पर पुष्प वर्षा करते हैं | धर्म की आध्यात्मिक परिभाषा की जगह कर्म -

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

कांड, पूजा- पाठ और व्यक्ति पूजा को धर्म मान बैठे है, जबकि धर्म दार्शनिक सूक्ष्म अनुभूति है | श्रद्धा और अंधश्रद्धा के बिच की सूक्ष्म रेखा को पहचानना ज़रूरी है | कबीर ने अपने एक पद में लिखा है -

" पूजा - सेवा नेम व्रत गुड़ियन का सा खेल

जब लग पिउ परसै नहीं तब लग संसय मेल | "[९]

महंत की सवारी के ही दृश्य में एक छोटे से बच्चे के बीच में आ जाने पर साधु उसकी चमड़ी उधेड़ने की बात करते है, तभी कबीर बिच में आ जाते हैं और उसे बचा लेते है | साधुओं के अखाड़े के बीच में लड़ाई के दृश्य को दिखाया है | इसी समय अखाड़ों की लड़ाई में तोपे चलने लगती है और माँ - बहन की गाली के साथ पत्थरबाज़ी होने लगती है | धर्म के नाम पर हो रही हिंसा और श्रेष्ठता की होड़ का यह करूण दृश्य बन पड़ा है |

इस नाटक के तीसरे दृश्य में भी मानवता शर्मसार होती दिखाई है जब गरीब चमारों की बस्ती को हटाने के लिए महंत कोतवाल को रिश्वत देता है, क्योंकि बस्ती के सामने मठ की ज़मीन थी और वह खुद को ऊच्च तो उन गरीबों को नीच समझता है | मौलवी साहब कबीर के पदों के प्रचार पसार और उनकी विचारधारा के फैलावे से डर रहे हैं | और उसके खिलाफ कोतवाल को भड़काते हैं कि कबीर दीन की तौहीन करते हैं और जहां जाते है वहां मजमा खड़ा हो जाता है | भिखारी कबीर का पद गाता है, जिसमें वह कहते हैं पूजा-पाठ और कुरान पढ़ने से या शिष्य बनाने से ईश्वर नहीं मिलते -

"बहुत मिले मोहि नेमी धर्मी प्रात करे असनाना

पीपर पाथर पूजन लागै, तीरथ बने भूलाना

बहुत ही देखे पीर औलिया, पढ़ै किताब कुराना

करै मुरीद कबर बतलावै, उनहूँ खुदा न जाना | "[१०]

कबीर की विचारधारा समन्वयवादी विचारधारा है और इसके द्वारा धर्म के सूत्रधार मानने वालों का वर्चस्व कम हो सकता था | कबीर रचित पद भिखारी गाता है -

" वही महादेव, वही मुहम्मद, ब्रहमा आदम कहिए |

को हिन्दू, को तुरक कहावै, एक जिमी पर रहिये |

वेद कितेब पढ़े वे कुतबा, वे मुल्ला वे पांडे |

बोगी जोगी नाम धरयो इक माटी के भांडे ||"

कहहिं कबीर वे दोनों भूले ... | "[११]

ईश्वर एक ही है और सब में है, हर मनुष्य में है | ईश्वर ने सब में सामान बीज डाले है, हमने क्यारियाँ बनाकर उनको विभाजित किया है | भिखारी कबीर का एक और पद गाता है जिसमें धर्म की वास्तविक परिभाषा नज़र आ रही है -

"साधो, एक रूप सब माँही |

अपने मनहि विचार के देखो और दूसरा नाहीं |

एकै त्वचा, रुधिर पुन एकै, विप्र शूद्र के माहीं || "[१२]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
IJARSCT
Impact Factor: 7.301

धर्म के असली मर्म को पहचानने वाले अंधे भिखारी को कोड़े मारकर मार दिया जाता है | कबीर के कवित गानेवालों पर भय फ़ैलाने के लिए यह कृत्य किया जाता है | साधु मौलविओं का अहम्, दम्भ, सत्ता का दुरुपयोग और सामान्य गरीब लोगों के शोषण को यहाँ दर्शाया गया है | कबीर निर्गुण ब्रह्म के उपासक हैं | उनके राम अवतार धारण करके मनुष्य रूप में अवतरित नहीं है परन्तु निर्गुण निराकार ब्रह्म है | कबीर की रहस्यवादी विचारधारा नाटक के चौथे दृश्य के इस पद में द्रष्टव्य है -

" झीनी झीनी बीनी चदरिया |
काहे का ताना काहे की भरनी
कौन तार से बीनी चदरिया | "[१३]

इसी चौथे दृश्य में कबीर, सेना, पीपा मिलकर चर्चा विमर्श करते हैं | दया - धर्म, करुणा से ही ईश्वर मिलन हो सकता है जो अंत में मानवता के सही आभूषण माने जा सकते है | इन्द्रियों को वश में करने से या जप - तप करने से ईश्वर प्राप्ति होती है -

" न हरि रीझै जप - तप कीन्हे, न काया के जारे
न हरि रीझै धोती छाँड़े, न पांचों के मारे |
दया राखी धरम को पानै, जग सो रहै उदासी
अपना सा जिब सबको जानै, ताहै मिलै अविनासी | "[१४]

नाटक के दूसरे अंक में पीपा के संवाद से ज्ञात होता है कि महंत और गोरख पंथियों के बीच मनमुटाव है और महंत के आदमियों ने पांच गोरख पंथियों को मरवा डाला | यहां धर्म पर हिंसा, स्वार्थ और सम्पत्ति हावी नज़र आ रहे है | कबीर और साधु महाराज की बहस में कबीर उन्हें खरी - खरी सुनाते है -

" माला फेरी, तिलक लगाया
लम्बी जटा बढाता है
अंतर तेरे कुफ़र कटारी
यों नहीं साहब मिलता है | "[१५]

साधु के अपनी जात पर गर्व करने पर कबीर कहते है - " क्या सच ? तब तो आपकी धमनियों में अमृत बहता होगा ! बहता है न ! माँ के पेट से निकले होंगे तो माथे पर तिलक लगाकर निकले होंगे ! "[१६] इस दृश्य में ही कबीर जात - पात की संकीर्णता के विषय में कहते है -

" एकै बूँद, एकै मल मूतर, एक चाम, एक गूदा |
एक जाति है सब उत्पन्ना, को ब्राह्मण, को सूदा | "[१७]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

जातिवाद का एक और दृष्टांत कबीर सुनाते हैं जब रैदास के गीत सुनकर पुजारी उसे मंदिर में आकर आरती करने को कहता है पर जब उन्हें पता चलता है की वह चमार है उसे डंडे मार - मारकर भगा देता है, यहां रैदास की प्रतिभा गौण और उसकी जाति प्रमुख मानी जाती है | धर्म लोगों को जोड़ने का कार्य करता है पर यहां वर्ण भेद, वर्गभेद उससे मानव होने पर हीनता महसूस करवाते हैं | नाटक के अंत में सिकंदर और कबीर के धर्म केंद्रित संवाद रोचक बन पड़े हैं | कबीर सिकंदर से कहते है - " मैं इंसान को हिन्दू और तुर्क की नज़र से नहीं देखता, मैं उसे केवल इंसान की नज़र से, खुदा के बंदे की नज़र से देखता हूँ |"[१८]

इस प्रकार 'कबीरा खड़ा बाज़ार में नाटक' कबीर के दृष्टिकोण से धर्म की परिभाषा को प्रस्तुत करता है | यहां मानवधर्म सभी धर्मों से ऊपर है, यह कबीर और इनके मित्रों द्वारा द्रष्टव्य है | जबकि साधु, मौलवी, महंत के पात्र की विचारधारा अनुसार पूजा - पाठ, तप सेवा द्वारा ईश्वर प्राप्ति होती है और वही लोगों को ईश्वर तक पहुंचा सकते है, परन्तु यही लोग विविध दावपेचों और राजनीती के द्वारा निरीह प्रजा का शोषण करते हैं | जबकि सिकंदर और कोतवाल का पात्र सत्ता का दुरूपयोग करने वाले और साथ ही धर्म की अपनी विचारधारा लोगों पर थोपने वाले पात्र हैं और जनता की उठी हुई आवाज़ को दमित करते हैं | कबीर का क्रांतिकारी व्यक्तित्व, समाजसुधारक रूप यहां द्रष्टव्य है | कबीर मानव को मानव से जोड़ना चाहते हैं, उनकी दृष्टि वर्ग, वर्ण, जाति के आधार पर विभाजित करनेवाले धर्म से हटकर समन्वयवादी है | धर्म और ऊंच - नीच या जातियों के संघर्ष में जीते चाहे कोई भी मानवता शर्मसार होती है या मरती है |

संदर्भ सूची :

[1].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३०
[2].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३२
[3].यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त,पृ.०६
[4].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३५
[5].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३६
[6].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३६
[7].काव्य तारा, सं. बद्रीनाथ तिवारी , राजेंद्र प्रसाद सिंह, पृ.२१
[8].रश्मिरथी, दिनकर , पृ १३
[9].कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.२४६
[10].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.४९
[11].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५०
[12].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५१
[13].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५५

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

[14]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५६

[15]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.८१

[16]. कबीरा खड़ा बाजार में ,भीष्म साहनी, पृ.८१

[17]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.८१

[18]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.१२६

[19]. कबीरा खड़ा बाजार में, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |

[20]. कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज। नई दिल्ली |

[21]. काव्य तारा, सं. डॉ. बद्रीनाथ तिवारी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह |

[22]. रश्मिरथी, रामधारीसिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद |

[23]. यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त,तृतीय आवृत्ति, साहित्य प्रेस,चिरगांव |